बाइबल टीचर

वर्ष 17 | जून 2020 | अंक 7

सम्पादकीय

मेरा शत्रु कौन है?

एक व्यक्ति ने एक बार यीशु से पूछा कि "मेरा पड़ोसी कौन है?" (लूका 10:29)। परन्तु अपने इस लेख में मैं यह पूछना चाहता हूं कि मेरा शत्रु कौन है? कई बार हम अपना पूरा जीवन यह पता करने में लगा देते हैं कि मेरा शत्रु वास्तव में कौन है? कई बार कलीसिया में ऐसी घटनाएं हो जाती है कि यह जानना कठिन हो जाता है कि हमारा शत्रु कौन है? ऐसा भी होता है कि किसी शिक्षा को लेकर आपस में विवाद खड़ा हो जाता है। कई प्रचारक आपस में एक दूसरे के शत्रु बन जाते हैं। और यह इसलिये होता है क्योंकि कोई किसी बात पर सहमत नहीं होता और ऐसा भी देखने में आता है कि प्रचारक एक दूसरे के शत्रु बन जाते हैं।

कई बार ऐसा देखने में आता है कि कलीसिया में कोई भाई किसी बात से नाराज हो जाता है और वह अराधना में आना बंद कर देता है और यह कहकर कि यहां कुछ बातें सही नहीं है। कई बार लोग कहते हैं, कि हम ऐसी कलीसिया में नहीं आना चाहते हैं जहां बुराईयां भरी हुई है। ऐसा करने से वे कई सदस्यों को ठोकर दिलाने का कारण बन जाते हैं। यदि हमारे कारण किसी को ठोकर लगती है तो हम एक शत्रु बन जाते हैं क्योंकि हमारे कारण कोई कलीसिया से चला जाता हैं और जो लोग कलीसिया को छोड़कर चले जाते हैं वे यीशु के शत्रु बन जाते हैं। ऐसे लोगों के लिये अच्छा रहेगा कि वे पौलुस के शब्दों को पढ़ें जो उसने फिलिप्पियों 4:4-9 में कहे थे।

कई बार कलीसिया में ऐसा भी देखा जाता है कि कुछ लोग ऐसा विचार रखते हैं कि हम बहुत अधिक बाइबल को जानते हैं। और दूसरे लोगों को कुछ नहीं आता। ऐसा व्यवहार भी गलत है। ऐसे लोगों के विषय में यहूदा ने कहा था, "हे प्रियों, तुम उन बातों को स्मरण रखो जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रेरित पहिले कह चुके हैं वे तुम से कहा करते थे कि पिछले दिनों में ऐसे ठट्ठा करने वाले होंगे जो अपनी अभक्ति की अभिलाषाओं के अनुसार चलेंगे। ये तो वे हैं जो फूट डालते हैं, वे शारीरिक लोग हैं जिनमें आत्मा नहीं।" (यहूदा 17-18)।

ऐसा भी देखा जाता है कि कुछ सदस्यों की ऐसी आदत होती है कि वे हमेशा कलीसिया में बुराईयां खोजते रहते हैं, यह एक ऐसा व्यवहार है जो मसीह के चरित्र में मेल नहीं खाता है। सब सदस्यों को कलीसियां में प्रेम से मिलकर कार्य करना चाहिए। प्रेरित पौलुस कहता है, "निदान हे भाईयो, आनंदित रहो, सिद्ध बनते जाओ;

ढांढस रखो एक मन रखो, मेल से रहो और प्रेम और शांति का दाता परमेश्वर तुम्हारे साथ होगा।" (2 कुरि. 13:11)। जब मसीही लोग एक मनसा के साथ मिलकर रहेंगे तब आपस में विषाद होना इतना आसान नहीं होगा। कलीसिया में सारे अगुवों को एक साथ मिलकर कार्य करना चाहिए और यदि हम ऐसा नहीं करते तो हम एक दूसरे के शत्रु हैं और मेरा शत्रु वही है जो मेरे को छोटा समझता है या अपने को बहुत अच्छा समझता है। पौलुस ने कलीसियां के भाईयों से कहा था, "सो यदि मसीह में कुछ शांति और प्रेम से ढांढस और आत्मा की सहभागिता और कुछ करूणा और दया है। तो मेरा यह आनन्द पूरा करो कि एक मन रहो और एक ही प्रेम एक ही चित और एक ही मनसा रखो। विरोध या झूठी बढ़ाई के लिये कुछ न करो पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो और हर एक अपनी ही हित की नहीं वरन दूसरों की हित की भी चिंता करे।" (फिलि. 2:1-4)।

कई लोग ऐसे भी होते हैं जिन्हें पाखण्डी कहा जाता है। वे अपने कार्यों से वह साबित कर देते हैं कि वे पाखण्डी है और बाइबल ऐसे लोगों के विषय में कहती है कि "किसी पांखण्डी को एक दो बारी समझा बुझाकर उससे अलग रह।" (तीतुस 3:10)। पाखण्डी लोग यीशु और उसकी कलीसिया के शत्रु हैं। जो लोग व्यर्थ की बहस और विवाद करते हैं ऐसे लोगों के लिये लिखा है, "यह जानकर कि ऐसा मनुष्य भटक गया है और अपने आप को दोषी ठहराकर पाप करता रहता है (तीतुस 3:11) सब अगुवों से बाइबल कहती है कि सारे काम बिना पक्षपात के करो। पाप करने वाले को सबके सामने समझा दे, ताकि और लोग भी डरे। (1 तीमु. 5:20-21) जो लोग बार-बार पाप करते हैं और कलीसिया की शांति को भंग करते हैं बाइबल कहती है ऐसे लोगों से अलग हो जाओ जैसा कि प्रेरित पौलुस कहता है, "यहां तक सुनने में आता है कि तुम में व्यभिचार होता है, वरन ऐसा व्यभिचार जो अन्य जातियों में भी नहीं होता, कि एक मनुष्य अपने पिता की पत्नी को रखता है। और तुम शोक तो नहीं करते, जिससे ऐसा काम करने वाला तुम्हारे बीच से निकाला जाये, परन्तु घमण्ड करते हो, मैं तो शरीर के भाव से तुमसे दूर था, परन्तु आत्मा के भाव से तुम्हारे साथ होकर मानो उपस्थिति की दशा में ऐसे काम करने वाले के विषय में यह आज्ञा दे चुका हूं कि जब तुम, और मेरी आत्मा हमारे प्रभु यीशु की सामर्थ के साथ इक्ट्ठे हो, तो ऐसा मनुष्य हमारे प्रभु यीशु के नाम से, शरीर के विनाश के लिये शैतान को सौंपा जाएं, ताकि उसकी आत्मा प्रभु यीशु के दिन में उद्धार पाए।" (1 कुरि. 5:1-5) ऐसे व्यक्ति को इसलिये अलग किया जाता है ताकि वह अपने अनुचित कार्य के लिये शर्मिंदा होकर वापस आये। जो लोग मन फिराकर वापस सही मार्ग पर नहीं आना चाहते ऐसे लोग कलीसिया के शत्रु हैं।

कई बार आपस के विवादों में पड़कर लोग मसीह की देह यानि कलीसिया को नुकसान पहुंचाते हैं। पौलुस कहता है, "यदि तुम एक दूसरे को दांत से काटते और फाड़ खाते हो, तो चौकस रहो, कि एक दूसरे का सत्यानाश न कर दो। (गलतियों 5:15) सबसे अच्छी सलाह यह है कि सारे सदस्यों को यह बात समझनी चाहिए "सबका आदर करो, भाईयो से प्रेम रखो, परमेश्वर से डरो, राजा का सम्मान करो।" (1 पतरस 2:17) आइये शैतान का सामना करें जो हमारा सबसे बड़ा शत्रु है। (याकूब 4:17)।

यीशु, एक महान शिक्षक

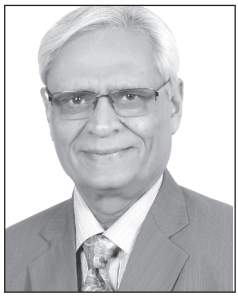

सनी डेविड

हमारे पास फिर से यह अवसर है कि हम उन महत्वपूर्ण बातों के ऊपर विचार करें जिनका संबंध हमारी आत्माओं से है। मैं आपके बारे में कुछ नहीं कहूंगा, न मैं अपने विषय में कुछ कहना चाहूंगा, परन्तु अपने कीमती समय की दृष्टिकोण में रखकर, मेरी इच्छा है कि मैं आपको उस व्यक्ति के बारे में बताऊं जिसने आपको और मुझे हमारे पापों से मुक्ति दिलाने के लिये सब कुछ सह लिया, और यहां तक, कि मृत्यु हां, क्रूस की मृत्यु को भी उठा लिया।

यूं तो यीशु का पालन-पोषण एक ऐसे परिवार में हुआ था जिनका धंधा बढ़ई का काम करने का था, परन्तु यीशु ने अपना अधिकांश समय परमेश्वर के कामों में, और प्रचार करने वा शिक्षा देने में ही लगाया। जब उसकी आयु बारह वर्ष की थी तो उसके घरवालों का विचार था कि उसे घर में ही रहना चाहिए। परन्तु एक दिन उसे घर में न पाकर वे बड़े चिंतित हुए और उसे ढूंढ़ने निकल पड़े। बहुत ढूंढ़ने के बाद जब वह उन्हें मिला, तो उन्होंने पाया कि वह एक मंदिर में उपदेशकों के बीच में बैठकर बातें कर रहा है, और सारे लोग उसकी समझ और ज्ञान की बातों से अत्यंत चकित थे। जब उसकी माता ने उससे आग्रह किया कि वह घर वापस चले और उसे बताया कि उसे ढूंढ़ने में कितने परेशान हुए, तो यीशु ने जवाब देकर कहा, "तुम मुझे क्यों ढूंढ़ते थे? क्या नहीं जानते थे, कि मुझे अपने पिता के कामों मे लगे रहना अवश्य है?" (लूका 2:49)।

यीशु धार्मिकता का एक बहुत बड़ा प्रचारक था। उसके उपदेशों में पवित्रता थी, प्रभाव था, आकर्षण था, और अधिकार था। इसीलिये जब वह प्रचार करता था तो उसे सुनने के लिये लोगों की भीड़ की भीड़ उमड़ पड़ती थी। और वह बैठकर उन्हें यूं उपदेश देता था, "धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धन्य है वे, जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शांति पाएंगे। धन्य है वे, जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे। धन्य है वे, जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे। धन्य है वे, जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी। धन्य हैं वे, जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे। धन्य हैं वे, जो मेल करवाने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे। धन्य हैं, वे जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।" (मत्ती 5:3-10)।

फिर वह अपने चेलों की ओर मुड़कर, उनसे कहता था, "तुम पृथ्वी के नमक हो, परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो वह फिर किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा? फिर वह किसी का काम का नहीं, केवल इसके कि बाहर फेंका जाए और मनुष्यों के पैरों के तले रौंदा जाए। तुम जगत की ज्योत हो; जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है वह छिप नहीं सकता। और लोग दिया जलाकर पैमाने के नीचे नहीं परन्तु दीवट पर रखते हैं, तब उससे घर के सब लोगों को प्रकाश पहुंचता है। उसी

प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें।" (मत्ती 5:13-16)।

फिर वह लोगों की भीड़ को देखकर, उनसे कहता था, "सावधान रहो ! तुम मनुष्यों को दिखाने के लिये अपने धर्म के काम न करो नहीं तो अपने स्वर्गीय पिता से कुछ भी फल न पाओगे।" (मत्ती 6:1)।

"अपने लिये पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो; जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते है। परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहां न तो कीड़ा और न काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर न सेंध लगाते न चुराते हैं। क्योंकि जहां तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा।" (मत्ती 6:19-21)।

किन्तु, यीशु न केवल एक प्रभावशाली प्रचारक ही था परन्तु वह एक महान शिक्षक भी था। उसका शिक्षा देने का ढंग बड़ा ही निराला था। वह अकसर लोगों को दृष्टांतों के द्वारा सिखाता था। अर्थात वह पृथ्वी पर ही साधारण वस्तुओं को लेकर उनके द्वारा बड़ी-बड़ी आत्मिक शिक्षाएं दिया करता था। एक बार उसने कहा, "स्वर्ग का राज्य उस बड़े जाल के समान है, जो समुद्र में डाला गया, और हर प्रकार की मछलियों को समेट लायां और जब भर गया, तो वे उसको किनारे पर खींच लाए, और बैठकर अच्छी-अच्छी को तो बरतनों में इकट्ठा किया और निकम्मी-निकम्मी फेंक दी। जगत के अंत में ऐसा ही होगा, स्वर्गदूत आकर दुष्टों को धर्मियों से अलग करेंगे, और उन्हें आग के कुंड में डालेंगे। वहां रोना और दांत पीसना होगा।" (मत्ती 13:47-50) वे लोग जो उसकी सुनते थे, समुद्र में जाल से मछलियां पकड़ने से अच्छी तरह परिचित थे। वे देख सकते थे कि यीशु इस दृष्टांत से उन्हें क्या शिक्षा दे रहा है। अर्थात, वे सब जो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना चाहेंगे प्रवेश न कर सकेंगे, परन्तु केवल वही जो परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी होंगे स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करेंगे। (मत्ती 7:21; लूका 13:24)।

दृष्टांतों के अतिरिक्त, कभी-कभी वह उन्हें किसी वस्तु को दिखा कर, उसके द्वारा भी शिक्षा देता था। जैसे कि एक जगह हम देखते हैं, कि जब कुछ लोग उसकी परीक्षा लेने के विचार से उसके पास आए, और वह कहकर उसे परखने लगे, कि तू हमें बता कि कैसर को कर देना उचित है या नहीं? तो यीशु ने उनसे कहा कि मुझे एक सिक्का दिखाओ, जब उन्होंने जेब में से निकालकर उसे एक सिक्का दिया, तो यीशु ने उनसे पूछा कि इस पर किसी की मूर्ति और नाम छपा है? उन्होंने कहा, कैसर का। इस पर यीशु ने उन से कहा, कि जो कैसर का है वह कैसर को दो और जो परमेश्वर का है उसे परमेश्वर को दो। (मत्ती 22:15-22)। यहां यीशु के सामने दो प्रकार के लोग थे, एक तो वे लोग थे जो हेरोदी कहलाते थे और कैसर का बड़ा सम्मान करते थे और उसे कर देना बड़ा आवश्यक समझते थे। दूसरे, वे लोग थे जो अपने आपको कैसर का बंधुआ समझते थे और उसे कर देना उचित नहीं समझते थे। सो यदि यीशु उन्हें यह उत्तर देता, कि कर दो, तो उस उत्तर से कुछ लोग तो प्रसन्न हो जाते परन्तु कुछ अप्रसन्न हो जाते। और यदि वह उनसे कहता कि कर न दो तो यह सुनकर कुछ लोग तो प्रसन्न होते परन्तु अन्य लोग उसका विरोध कर उठते। परन्तु यीशु का जवाब इतना सही था कि उसे सुनकर वे बड़े ही अचंभित हुए।

फिर एक जगह हम देखते हैं, कि जब उसके चेलों में आपस में इस बात पर विवाद होने लगा, कि हम में से स्वर्ग के राज्य में बड़ा कौन है? तो इस पर यीशु ने एक छोटे बालक को पास बुलाकर उन के बीच में खड़ा किया, और कहा, "मैं तुम से सच कहता हूं, यदि तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो, तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे। जो कोई अपने आपको इस बालक के समान छोटा करेगा, वह स्वर्ग के राज्य में बड़ा होगा।" (मत्ती 18:1-4; लूका 9:46-48)। इस प्रकार, यीशु ने उन्हें नम्रता का दीनता का पाठ सिखाया। वह उन्हें सिखाना चाहता था कि वास्तव में बड़ा वही है जो अपने आप को छोटा बनाता है। सो थोड़ा आगे चलकर हम देखते हैं, कि एक जगह जब वह अपने चेलों के साथ भोजन करने बैठा, तो उसने एक बरतन में पानी लिया और उनके पैर धोने लगा। उसके चेलों को यह देखकर बड़ा ही अचम्भा हुआ, परन्तु यीशु ने उनसे कहा, कि मैं तुम्हें यह नमूना दिये जा रहा हूं, ताकि तुम भी एक दूसरे के साथ ऐसे ही नम्रता वा दीनता का व्यवहार रखो। (यूहन्ना 13:3-15)।

फिर जब नीकुदेमुस नाम का एक बड़ा ही प्रतिष्ठित मनुष्य यीशु के पास आकर, उसने कहने लगा कि "हे रब्बी, हम जानते हैं, कि तू परमेश्वर की ओर से गुरु होकर आया है; क्योंकि कोई इन चिन्हों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो, तो नहीं दिखा सकता।" यीशु ने उसकी बात सुनकर उससे कहा, "कि मैं तुझ से सच-सच कहता हूं, यदि कोई नए सिरे से न जन्में तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता। नीकुदेमुस ने उससे कहा, मनुष्य जब बूढ़ा हो गया, तो क्योंकर जन्म ले सकता है? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है? यीशु ने उत्तर दिया, कि मैं तुझ से सच-सच कहता हूं; जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है वह आत्मा है। अचम्भा न कर कि मैंने तुझ से कहा; कि तुम्हें नए सिरे से जन्म लेना अवश्य है। हवा जिधर चाहती है उधर चलती है, और तू उसका शब्द सुनता है, परन्तु नहीं जानता, कि वह कहां से आती और किधर को जाती है? जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है।" (यूहन्ना 3:1-8)।

यहां यीशु यह सिखा रहा है, कि प्रत्येक मनुष्य को उद्धार प्राप्त करने के लिये नए सिरे से जन्म लेना आवश्यक है। और यह नया जन्म शारीरिक जन्म की तरह नहीं, परन्तु यह जन्म जल और आत्मा से उस समय होता है, जब मनुष्य यीशु में विश्वास लाकर, आत्मा की शिक्षानुसार बपतिस्मे के द्वारा जल के भीतर, अपने पापों की क्षमा के लिये दफन होकर उसमें से बाहर आता है। (यूहन्ना 6:63; मरकुस 16:16; प्रेरितों 8:35-39; 1 कुरिन्थियों 12:13)। यीशु ने कहा कि इस बात को सुनकर अचंभित न हो क्योंकि जबकि तुम पृथ्वी पर की बहुतेरी बातों को ठीक से नहीं समझ सकते तो आत्मा की गूढ़ बातों को क्योंकर समझ सकते हो? परन्तु यदि कोई नए सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।

मित्रो, मेरा विश्वास है, कि आप अपने जीवन में यीशु की शिक्षाओं से अवश्य ही लाभ उठाएंगे।

यीशु ने जिस कलीसिया को बनाया था

जे. सी. चोट

बाइबल के इस अध्ययन में हम देखेंगे कि कलीसिया जिसे यीशु ने बनाया था।

हम सब जानते हैं कि आज संसार में बहुत सारी कलीसियाएं विद्यमान हैं। सबके अपने अपने नाम है तथा आराधना करने के तरीके है। किसी ने बताया है कि आज संसार में लगभग चार हजार से भी अधिक साम्प्रदायिक कलीसियाएं हैं। परन्तु सच्ची कलीसिया जिसके विषय में हम बाइबल में पढ़ते हैं यीशु द्वारा बनाई गई थी। आज परमेश्वर चाहता है कि हम उसकी सच्ची कलीसिया के लोग बने न कि मनुष्यों द्वारा बनाई गई कलसिया के। हमें बाइबल की तरफ वापस जाना है और यह जानना है कि कलीसिया की पहिचान क्या है?

सबसे पहिले हमें यह जानने की आवश्यकता है कि कलीसिया के विषय में बाइबल क्या कहती है? बाइबल हमें कलीसिया के बारे में सब कुछ बताती है। यह हमें बताती है कि कलीसिया की स्थापना किसने और कब की। इसकी नींव क्या है? इसका आरंभ कहां हुआ? यह किस नाम से जानी जाती है? इसका उद्धारकर्ता कौन है? इसका दाम क्या दिया गया? इसकी सदस्यता कैसे ली जा सकती है? इसकी आराधना कैसे होती है तथा इसकी अराधना और कार्य करने का तरीका क्या है?

हम पढ़ते हैं मत्ती 11:17-19 में कि पतरस और दूसरे चेलों ने यह अंगीकार कर लिया, था कि यीशु जीवते परमेश्वर का पुत्र है और फिर हम पढ़ते हैं यीशु ने कहा, "तू पतरस है, और मैं इस पत्थर पर अपने कलीसिया बनाऊंगा। और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे। मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियां दूंगा, ओर जो कुछ तू पृथ्वी पर बांधेगा, वह स्वर्ग में बंधेगा और जो कुछ तू पृथ्वी पर बांधेगा वह स्वर्ग में बंधेगा और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा।" (मत्ती 16:17-18) यहां हम देखते हैं कि यीशु ने अपनी कलीसिया बनाने के लिये कहा था। पतरस के अंगीकार पर यीशु ने अपनी कलीसिया को बनाया था और उसका अंगीकार था, "तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।" कई लोग कहते हैं कि कलीसिया की नींव पतरस के ऊपर रखी गई थी, पर ऐसा नहीं है। कई लोग यह भी कहते हैं कि पतरस पहिला पोप था, जबकि बाइबल कहीं भी पोप की बात नही करती। बाइबल में और भी बहुत सी आयतें हैं जो बताती है कि यीशु के अतिरिक्त कोई नींव नहीं है। (1 कुरि. 3:11)।

अब अगला प्रश्न यह है कि कलीसिया का आरंभ कहां हुआ था? इसके उत्तर को जानने के लिये हमें नये नियम को पढ़ना पढ़ेगा। पहली बार पुस्तकों को पढ़ने के द्वारा हमें पता चलता है कि कलीसिया को राज्य की तरह सम्बोधित किया गया है। यानि यह आरंभ से था। जब हम प्रेरितों की पुस्तक पढ़ते है तब हमें पता चलता है कि इसकी स्थापना 33वीं ई. सन में यरूशलेम में हुई थी। प्रभु यीशु की मृत्यु के

पश्चात जब वह जी उठा और अपने पिता परमेश्वर के पास चला गया तब उसने कहा था तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करें और बपतिस्मा ले। उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा, वह दोषी ठहराया जायेगा।" (मरकुस 15:15-16)। उसने यह भी कहा था कि यह होने से पहिले उन्हें यरूशलेम में ही ठहरे रहना है। उन्हें यानि प्रेरितों को ऊपर से सामर्थ मिलेगा और वे यरूशलेम से लेकर पृथ्वी के छोर तक उसके गवाह ठहरेंगे। (लूका 24:44-49; प्रेरितों 1:8)। जब पिन्तेकुरश्त का दिन आया, यह यहूदियों का त्योहार था, प्रेरित लोग यरूशलेम में थे। वहां तमाम स्थानों से लोग इक्ट्ठे थे और उनके ऊपर पवित्र आत्मा आया और वे अन्य भाषाओं में बोलने लगे ताकि तमाम स्थानों से आये हुए लोग उसके प्रवचन या सुसमाचार को सुन सकें। इसका परिणाम यह हुआ कि 3000 लोगों ने बुराई से मन फिराकर बपतिस्मा लिया और प्रभु ने उन्हें अपनी कलीसिया में मिला दिया। सो हम देखते हैं कि कलीसिया का आरंभ किस प्रकार से यरूशलेम में हुआ। अब यह किसकी कलीसिया थी? यीशु की कलीसिया या मसीह की कलीसिया।

अब जबकि हमने यह जाना कि कलीसिया का आरंभ कहां हुआ, तब हमें यह भी जानना चाहिए कि इसका आरंभ कब हुआ? इतिहासकार हमें बतातें हैं कि इसकी स्थापना लगभग 33वीं ई. सन में हुई। जो भी कलीसिया इस समय के पश्चात बनी वह यीशु की नहीं हो सकती। बाइबल की कलीसिया का आरंभ 33वीं ई सन में हुआ था। अर्थात सही कलीसिया का आरंभ उचित स्थान पर तथा उचित समय पर हुआ था। जबकि यीशु इसका संस्थापक है तथा मालिक है तब इसका नाम भी वह अपने ऊपर रखेगी। यह उसकी देह है। यद्यपि इसकी शुरूआत यरूशलेम में हुई थी परन्तु छोटी-छोटी कलीसियाएं जो मसीह के नाम से नाम से जानी जाती है सब स्थानों पर विद्यमान है। यह सारी कलीसियाएं प्रभु का नाम अपने ऊपर रखती थीं। पौलुस कहता है रोमियों 16:16 में "तुम्हें मसीह की कलीसियों को ओर से नमस्कार" फिर हम 1 कुरि. 12:27 में पढ़ते हैं, "इस प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो और अलग उसके अंग हो।" यानी कलीसिया मसीह की देह है और देह कलीसिया है। इसका सिर मसीह यीशु है। (कुल. 1:18) यदि कलीसिया को मसीह ने बनाया तो उसका संबंध इससे है। इसके सदस्य उसका नाम अपने ऊपर रखते है। मसीही यानी मसीह के लोग। (प्रेरितों 11:26, 26:28; 1 पतरस 4:11)। बाइबल यह भी बताती है, कि उद्धार केवल यीशु के नाम में है। (प्रेरितों 4:12)। हम सब कुछ यीशु के नाम से करते हैं। (कुल. 3:17)।

इफिसियों में हम पढ़ते हैं कि कलीसिया का सिर केवल यीशु है जैसे कि पत्नी का सिर पति है। वह इसका उद्धारकर्ता है क्योंकि इसके लिये उसने अपने प्राणों को दिया। (इफिसियों 5:23, 27)। अब बात यह कि कलीसिया के सदस्य कैसे बनें? जो इसमें प्रवेश पाना चाहता है वह यीशु में विश्वास प्रवेश पाना चाहता है वह यीशु में विश्वास लाकर अपने पापों से मन फिराये, यीशु को अंगीकार करें कि वह परमेश्वर का पुत्र है तथा यीशु में बपतिस्मा ले। (मरकुस 16:15, 16, प्रेरितों 2:38, मत्ती 10:10, लूका 13:3; तथा प्रेरितों 22:16)।

क्या स्त्री मण्डली में "अन्य भाषाएं" बोल सकती है?

बैटनी बर्टन चोट

"पैंटिकॉस्टल" आज संसार की सबसे तेजी से बढ़ने वाली धार्मिक संगठन में से एक है। इस में द असैम्बलीज ऑफ गॉड, द चर्च ऑफ गॉड, द पैंटिकॉस्टक चर्च आदि जैसी बहुत सी कलीसियाएं आ जाती हैं। मुख्य धारा के चर्चों की कई कलीसियाओं ने भी पवित्र आत्मा के बपतिस्मे, चमत्कारों, "बोलियां" बोलने और आश्चर्यजनक ढंगों से पवित्र आत्मा के काम करने के अन्य दावों जैसी "पैंटिकॉस्टल" शिक्षाओं को अपना लिया है।

विचार करने वाली बात

क्या आपने यह अध्ययन किया है कि बाइबल चमत्कारों के इस्तेमाल, अन्य भाषाओं के बोलने, विशेष दानों के विषय में जो पहली सदी के चुनिंदा मसीही लोगों को दिए जाते थे, क्या कहती है? क्या आप मानते हैं कि आज के कथित चमत्कार वैसे ही हैं जैसे तब हुआ करते थे? क्या "टीवी" पर दिखाई जाने वाली पैंटिकॉस्टल सभाएं सचमुच में आरंभिक कलीसिया की आराधना या प्रचार करने के अवसरों के विभिन्न हवालों से मेल खाती हैं?

ये कलीसियाएं "पवित्र आत्मा," "पैंटिकॉस्ट", चर्च ऑफ गॉड आदि जैसे बाइबल के शब्दों पर जोर देती हैं जिस कारण अधिकतर लोग उनके इतिहास, शिक्षा और परमेश्वर के वचन की तुलना में किए जाने वाले उनके कामों पर ध्यान दिए बिना वचन के अनुसार कलीसियाएं होने के दावों को सही मान लेते हैं।

यह सच है कि जब हम नये नियम को पढ़ते हैं तो वहां पता चलता है कि यीशु के स्वर्ग पर उठा लिए जाने के लगभग एक सप्ताह बाद पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा के उतरने से मसीह की कलीसिया का आरंभ हुआ था। सो इन समूहों की भाषा में इन नामों को लेकर अपने लिए इस्तेमाल कर लिया जाता है, जिस कारण वे लोग, जो हो सकता है कि सच्चाई की खोज बड़ी गम्भीरता से कर रहे हों, बड़ी उलझन में पड़ जाते हैं।

परन्तु समस्या यह है कि इन कलीसियाओं को मसीह ने पहली सदी में स्थापित नहीं किया था। "द असैम्बलीज ऑफ गॉड" को कई प्रचारकों तथा पूर्व मिशनरियों द्वारा 1914 में अमेरिका के हॉट स्प्रिंग्ज, आरकैंसा नामक स्थान में संगठित किया गया था। "द चर्च ऑफ गॉड" जो मूलतया "व होलिनैस चर्च" हुआ करता था, का आरंभ रिचर्ड जी, स्पर्लिंग द्वारा 1902 में मोनरो काउंटी, टैनिसी नामक स्थान में हुआ था। 1943 में टॉमलिंसन बंधुओं ने जिन्हें इसका नेतृत्व अपने पिता से विरासत में मिला था इसकी दो शाखाएं बना दी। दोनों शाखाओं के मुख्यालय अमरीका के टैनिसी राज्य के क्लीवलैंड नामक स्थान में हैं। "द पैंटिकॉस्टल होलिनैस चर्च" साऊथ कैरोलाइना राज्य में एंडर्सन नामक स्थान में 1858 में बना था। आज दुनिया भर में सैकड़ों प्रकार

की पैंटिकॉस्टल कलीसियाएं हैं, जिनमें से कुछ तो संगठित हैं और कुछ स्वतंत्र रूप में कार्य कर रही हैं। परन्तु इनमें से किसी भी गुट का आरंभ पहली सदी में नहीं हुआ था। जिसका अर्थ यह है कि वे सब मूल कलीसिया नहीं हो सकती, जिसका आरंभ यीशु ने किया था।

कलीसिया का जन्म चाहे पिन्तेकुस्त के दिन हुआ, परन्तु परमेश्वर का अपने परिवार को उस नाम से पुकारकर उस यहूदी पर्व के दिन को महिमा करने का कोई इरादा नहीं था। इफिसियों 3:14, 15 हमें बताता है कि हमें "उस पिता के सामने घुटने" टेकने आवश्यक है, जिससे स्वर्ग और पृथ्वी पर, हर एक घराने का नाम रखा जाता है। प्रेरितों 4:12 कहता है कि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में (मसीह के नाम के सिवाय) और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।" रोम की कलीसिया को पौलुस ने लिखा कि हम मसीह के साथ ब्याहे गए हैं (रोमियों 7:4) और रोमियों 16:16 में उसने कहा कि "तुम को मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार।" इफिसियों 5:23-32 पति और उसकी पत्नी के बीच तथा मसीह और कलीसिया के बीच पाई जाने वाली एक सुन्दर समानता को दिखाता है।

इन आयतों से साफ पता चलता है कि पूर्ण रूप में कलीसिया और निजी तौर पर मसीही लोगों के लिए दूल्हे का यानी मसीह का नाम अपनाना है। वचन में कहीं पर भी कलीसिया को "पैंटिकॉस्टल" कहकर यहूदी पर्व को महिमा नहीं दी गई है। लोगों ने ऐसा करके बड़ी गंभीर गलती की है, परन्तु फिर भी वे पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाए होने का दावा करते हैं। यदि पवित्र आत्मा उनके साथ उसी प्रकार से कार्य कर रहा होता जैसे प्रेरितों के साथ करता था, तो जो कुछ उसने पहले से नये नियम में लिख दिया था, उससे हटकर उसने उन्हं ऐसी अन्य और गंभीर गलतियां नहीं करने देनी थी।

ये लोग पवित्र आत्मा के चमत्कारी कार्य पर इस प्रकार से जोर देते हैं जैसे परमेश्वरत्व में वही प्रमुख हो, और जैसे चमत्कार करना और शारीरिक चंगाई देना ही परमेश्वर का प्रमुख कार्य हो।

विचार करने वाली बात

प्रेरितों के काम की पुस्तक और विभिन्न कलीसियाओं तथा लोगों के नाम लिखे पत्रों को पढ़ें और उनमें किए जाने वाले प्रत्येक आश्चर्यकर्म को लिख लें। अपनी बाइबल में इन आयतों को एक रंग से मार्क कर लें ताकि पेज पलटने पर आसानी से वे आप को दिखाई दे सकें और आपको पता चल सके कि कहां आश्चर्यकर्म हुए थे कितने कम हुए थे।

जब कोई खुली आंखों से नये नियम को ध्यान से पढ़ता है तो उसे पता चलता है कि नया नियम पूरा होने से पहले, पवित्र आत्मा नये नियम को लिखने और उस समय सुनाए गए वचन को दृढ़ करने के प्रेरणा देने के लिए दिया गया था। परन्तु तब ही वह अपना नहीं बल्कि "मसीह का प्रचार" करने की प्रेरणा देता था और शारीरिक चंगाई केवल संदेश देने वाले की बात को पक्का करने के लिए कभी कभार हो जाती थी, क्योंकि चमत्कार करना कभी भी प्रचार करने का उद्देश्य नहीं होता था।

पिन्तेकुस्त के दिन, पतरस ने यीशु का प्रचार किया (प्रेरितों 2), फिलिप्पुस सामरिया में यीशु और परमेश्वर के राज्य की बातें सुनाने गया (प्रेरितों 8:12), उसने खोजे को यीशु के विषय में बताया (प्रेरितों 8:35) और पौलुस अपने मनपरिवर्तन के तुरन्त बाद मसीह का प्रचार करने लगा था (प्रेरितों 9:20)। वचन में कहीं पर भी प्रचारकों ने पवित्र आत्मा के विषय पर प्रचार नहीं किया, जैसा कि आज के पैंटिकॉस्टल प्रचारक करते हैं।

इसके अलावा, सुसमाचार के विवरणों के बाद, केवल प्रेरितों के काम की पुस्तक में ही आश्चर्यक्रमों के निजी मामलों की बात मिलती है। प्रेरितों के काम में वापस जाकर वचन में आश्चर्यकर्मों की प्रत्येक घटना को चिन्हित करना आंखें खोल देने वाला होगा। बहुत से पाठक आज कलीसियाओं में इस विषय तथा "चमत्कार" होने पर दिए जाने वाले अत्यधिक बल से यह देखकर चकित रह जाएंगे कि उस विवरण में उन पर कितना कम जोर दिया गया है और किस प्रकार केवल कुछ मामलों का उल्लेख है। पत्रियों में ही केवल 1 कुरिन्थियों, गलातियों और इब्रानियों में आश्चर्यक्रमों का उल्लेख है। क्यों भला?

विचार करने वाली बात

व्यवस्थाविवरण 13:1-5 में परमेश्वर ने कहा कि झूठा नबी किसी आज्ञा के समर्थन के लिए जो उसने लोगों को दी हो जो पहले से कही गई परमेश्वर की बात का उल्लंघन हो, कोई चिन्ह या अचम्भा कर सकता था। ऐसा होने पर लोगों को ऐसे नबी की बात मानने से मना किया गया था और उन्हें आज्ञा थी कि उसे मार डाला जाए। जब "पास्टर" उसका जो नये नियम में लिखा गया है, उल्लंघन करते हुए बोलने का दावा करते और "चमत्कार" करने का दावा करते हैं, तो उनके साथ और उनके संदेश के साथ क्या होना आवश्यक है?

नये नियम की पुस्तकें पूरी हो जाने से आश्चर्यकक्रमों की आवश्यकता कम होती जा रही थी। जैसा कि मरकुस 16:20 में मिलता है, कि वचन के लिखे जाने और साथ-साथ होने वाले चिन्हों के द्वारा इसकी पुष्टि किए जाने के बाद आश्चर्यकक्रमों का युग समाप्त होने जा रहा था।

वचन के किंग जेम्स वाले अनुवाद में बोलियों के उल्लेख के कारण 1 कुरिन्थियों 14 अध्याय पैंटिकॉस्टल लोगों का पसंदीदा हवाला है। उन्होंने इन बोलियों का अर्थ स्वर्गीय भाषा निकाल लिया है, जिसे केवल परमेश्वर ही समझ सकता है। जिस कारण वे पवित्र आत्मा की चमत्कारी शक्ति के द्वारा आज ऐसी भाषाएं बोलने का दावा करते हैं। क्या यह सच है? पूरे हवाले को ध्यान से देखने पर पता चलेगा कि उनकी शिक्षाएं और व्यवहार दी जाने वाली स्पष्ट शिक्षाओं के बिल्कुल उलट हैं।

1. आयत 40 से आरंभ करके पीछे को देखने पर, हमें पता चलता है कि पवित्र आत्मा प्रेरित से "सारी बातें शीलीनता और व्यवस्थित रूप से" किए जाने को कह रहा था। पैंटिकॉस्टल सभाएं तालियां बजाने, शोरगुल मचाने और बीच-बीच में जोश में आने के लिए प्रसिद्ध हैं, जो कोई बात कहने या बोलियां बोलने के लिए अचानक पवित्र आत्मा से भर जाने का दावा करते हैं। पवित्र आत्मा ने लोगों को सीधे-सीधे

उसका जो उसने 1 कुरिन्थियों14:40 में लिखा था, विरोध करने के लिए नहीं उकसाना था।

2. अन्य भाषाएं बोलने और भविष्यवाणी करने की बात करती आयतों के बीच में देखें, पवित्र आत्मा की प्रेरणा से आज्ञा दी गई है, "स्त्रियां कलीसियां की सभा में चुप रहें, क्योंकि उन्हें बातें करने की आज्ञा नहीं, परन्तु अधीन रहने की आज्ञा है. जैसा व्यवस्था में लिखा भी है। और यदि वे कुछ सीखना चाहें, तो घर में अपने अपने पति से पूछें, क्योंकि स्त्री का कलीसिया में बातें करना लज्जा की बात है" (1 कुरिन्थियों 14:34, 35)।

पैंटिकॉस्टल ग्रुप अपनी बहुत सी महिला प्रचारकों के लिए प्रसिद्ध हैं, और इस बात के लिए कि उनकी सभाओं में पुरुषों से कहीं अधिक उनकी महिलाएं अन्य भाषाएं बोलती हैं। वे पवित्र आत्मा की सामर्थ से बल्कि उसके नियंत्रण में बोलने का दावा करते हैं, जैसे कि उनका अपने व्यवहार पर कोई वश न हो। परन्तु आयत 32 साफ कहती है कि पवित्र आत्मा किसी से उसकी इच्छा के विरूद्ध नहीं बुलवाएगा। सो ये लोग बोलते हैं क्योंकि उन्होंने बोलना चुना है, और जो वे बोलते या करते हैं, वह पवित्र आत्मा के द्वारा लिखित इन स्पष्ट शब्दों का सीधा उल्लंघन है। इसी तथ्य से हम यह जान सकते हैं कि पवित्र आत्मा उन्हें बोलने के लिए उकसाता नहीं है।

3. आयत 33 कहती है कि "परमेश्वर गड़बड़ी का (परमेश्वर) नहीं है। 29-32 आयतों में बताया गया है कि जो लोग भविष्यवाणी करते (यानी वचन सुनाते या सिखाते) हैं, वे बारी-बारी से बोलें ताकि गड़बड़ी न हो। विभिन्न लोगों के उछलने, आत्मा का प्रकाशन होने का दावा करने, अन्य भाषाएं बोलते हुए जोश में आकर दूसरों को रोकने (जैसा कि पैंटिकॉस्टल कलीसियाओं में आम होता है) के विचार इन आयतों में जिनकी स्वयं पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरणा दी गई थी, मनाही की गई है।

4. 9, 10, 11 आयतों में इन भाषाओं को स्पष्ट रूप में मनुष्यों द्वारा बोली जाने वाली भाषाएं बताया गया है। आयत 9 में पौलुस पूछता है, ऐसे ही तुम भी यदि जीभ से साफ साफ बातें न कहो, तो जो कुछ कहा जाता है वह कैसे समझा जाएगा? तुम तो हवा से बातें करने वाले ठहरोगे" यही प्रश्न उसने आज अन्य भाषाएं बोलने का दावा करने वालों से पूछता था।

5. आयत 10 साफ कहती है कि जगत में कितने ही प्रकार की भाषाएं हैं (ध्यान दें कि वह स्वर्गीय भाषा की बात नहीं कर रहा) और उनमें से कोई भी बिना अर्थ की नहीं है।

6. आयत 11 कहती है कि यदि पौलुस को बोली जाने वाली किसी भाषा का अर्थ पता न हो तो उसने बोलने के लिए परदेशी होना था और बोलने वाला उसके लिए परदेशी होना था। विभ्भिन्न मानवीय भाषाओं और सुनने वालों के लिए बाहरी भाषा में बोलने के प्रश्न के विषय की बात होने पर ये सभी बातें बिल्कुल समझ में आती हैं।

7. पौलुस का निष्कर्ष था कि (आयत 12) उनमें कलीसिया कि उन्नति की धुन होनी चाहिए और आयत 19 में उसने कहा कि वह समझ में न आ सकने वाले दस हजार शब्द बोलने के बजाय, अपने सुनने वालों को समझ में आ सकने वाले पांच

शब्द बोलना पसंद करेगा। पवित्र आत्मा ने यदि उस समय पौलुस को ऐसी बातें लिखने को कह दिया, तो किसी को कैसे लग सकता है कि आज ऐसी भाषाएं जिनका किसी के लिए भी कोई अर्थ नहीं है, बोलने के लिए उक्साने वाला पौलुस ही है और इससे गड़बड़ी छोड़ और कुछ नहीं मिलता? यह सब इस अध्याय का सीधा-सीधा उल्लंघन है।

विचार करने वाली बात

यदि आप टैलिविजन पर "पैंटिकॉस्टल" कार्यक्रमों को देखें तो इनमें नोट करें कि पवित्र आत्मा कितनी बार बोला गया। परमेश्वर और यीशु भी नोट करें कि कितनी बार बोला गया। फिर इसे प्रेरितों के काम की पुस्तक में लिखित प्रवचनों से मिलाएं।

1 कुरिन्थियों 14 अध्याय में पौलुस के सामने वास्तविक परिस्थिति क्या थी?

प्रेरितों के काम 2 अध्याय में वापस जाने पर हमें पता चलता है कि प्रेरितों 1:5 में यीशु की प्रतिज्ञा के अनुसार प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिया गया। आत्मा के इस बपतिस्मे से वे हर प्रकार के आश्चर्यकर्म करने के योग्य बन गए। क्योंकि उन्हें चमत्कारी ज्ञान, बुद्धि, परख, अनेक प्रकार की भाषाएं बोलने की सामर्थ, जिन्हें उन्होंने सीखा नहीं था, बीमारों को चंगा करने की शक्ति दुष्ट आत्माओं को निकालने की शक्ति दी गई। प्रेरितों 5:16 कहता है कि प्रेरितों के पास लाए गए सब लोगों को चंगा किया जाता था। उनके साथ ऐसा कभी नहीं हुआ कि उन्हें किसी को चंगाई न दे पाने पर यह बहाना बनाना पड़े कि बीमार व्यक्ति का विश्वास नहीं था, जैसा कि आज के कथित "विश्वास से चंगाई देने वाले" करते हैं। प्रेरितों के आश्चर्यकर्म तात्कालिक और पूर्ण होते थे, न कि बीमार व्यक्ति के किस्तों में चंगा होने के जैसा कि आज दावा किया जाता है।

प्रेरितों 5:32 चाहे साफ कहता है कि परमेश्वर अपने सब आज्ञा मानने वालों को पवित्र आत्मा देता था, परन्तु आश्चर्यकर्म केवल प्रेरित ही कर सकते थे। कई हजार लोगों ने बपतिस्मा लिया था और वे मसीही बने थे, परन्तु आयत 12 बताती है कि "प्रेरितों के हाथों से बहुत चिन्ह और अद्‌भुत कम लोगों में दिखाए जाते थे।"

प्रेरितों को छोड़ और कोई भी तब तक आश्चर्यकर्म नहीं कर सकता था जब तक प्रेरितों ने कुछ मसीही लोगों को चुन कर (जो पहले से पवित्र आत्मा से परिपूर्ण थे, प्रेरितों 6:3) उन्हें विशेष रूप में एक एक को दान देते हुए उनके ऊपर हाथ नहीं रखे। ये लोग वे सब काम कर सकते थे जिन्हें प्रेरित कर सकते थे, परन्तु एक व्यक्ति को कोई विशेष भाषा बोलने की शक्ति किसी दूसरे को किसी दूसरी भाषा में बोलने की शक्ति किसी और को बीमारों को चंगाई देने की शक्ति, किसी अन्य को चमत्कारी बोलने वाले लोग होने के कारण भाषा का अर्थ बताने की शक्ति, किसी और को भविष्यवाणी का दान आदि मिलता था।

1 कुरिन्थियों 12:8-10 में साफ दिखाते हुए कि एक मसीही को एक दान, किसी दूसरे मसीही को कोई और दान दिया जाता था, ताकि वे नया नियम लिखे जाने से पहले के उस समय की अपनी आत्मिक उन्नति में एक दूसरे के ऊपर निर्भर हो, दोनों की पूरी सूची दी गई हैं। कुछ मामलों में ऐसे अर्थ बताने वालों की आवश्यकता

थी (ऐसा कोई मामला नहीं मिलता जहां प्रेरित को अनुवादक की आवश्यकता हो, जो इस बात का प्रमाण है कि जहां भी वे जाते थे, पवित्र आत्मा उन्हें वहां की भाषा बोलने में सक्षम बना देता था।)

यह स्पष्ट है कि किसी मसीही को जो अपने जन्म स्थान पर न रह रहा हो, चमत्कारी ढंग से स्थानीय भाषा का ज्ञान दिया जा सकता था। परन्तु यदि वह किसी और जगह जाता जहां कोई और भाषा बोली जाती हो, जहां हो सकता था कि "उस पर हाथ" रखने के लिए कोई प्रेरित न हो। ऐसी स्थिति में चमत्कारी दान से जो पहले से उसके पास था तभी उपयोगी था यदि उस मण्डली के किसी व्यक्ति के पास अर्थ बताने का चमत्कारी दान हो, ताकि उसकी अब "बाहरी" भाषा का अनुवाद स्थानीय लोगों की भाषा में हो सके।

कहने का मतलब यह है कि हमें यह समझना आवश्यक है कि वचन साफ बताता है कि जब किसी व्यक्ति को अन्य भाषाएं बोलने का दान दिया जाता था तो इसका अर्थ यह होता था, कि किसी एक भाषा का ज्ञान आश्चर्यकर्म ढंग से दिया गया था, जो कि साफ है कि दान दिए जाने के समय उसे उसकी आवश्यकता थी। उसे सब बातों का ज्ञान नहीं दिया जाता था, न ही ऐसा है कि वह जहां जाता हो वहां की भाषा अपने आप बोलने लगता हो। यदि ऐसा होता तो अनुवाद करने की आवश्यकता न होती। परन्तु सताव के बाद और मसीही लोगों के एक से दूसरी जगह बदलते रहने के कारण भाषा का ज्ञान और भाषा का अर्थ बताना दोनों आवश्यक थे।

इस संदर्भ में पौलुस ने चमत्कारी "भाषाओं" के उपयोग की कई बातें बताई:

ऐसी भाषा बोलने वाले जिसकी समझ स्थानीय मसीही लोगों को न हो, जानते थे कि उनका दान परमेश्वर की ओर से है और परमेश्वर इस बात को समझता था कि वे क्या कह रहे हैं (और आज के "अन्य भाषाएं" बोलने के विपरीत जब बोलने वाले को ही पता नहीं होता कि वह क्या कह रहा है, आयत 4 में पौलुस ने कहा कि उस समय का बोलने वाला अपनी उन्नति करता था यानि उसे मालूम होता था कि वह क्या कह रहा है) परन्तु सुनने वालों के लिए इसका कोई वास्तविक लाभ तब तक नहीं था जब तक कोई उन्हें उसका अर्थ न समझाए (1 कुरिन्थियों 14:2)।

सच्चाई की उसकी अपनी समझ जिसे वह समझा रहा था, सुनने वालों की समझ से बाहर थी, सो सुनने वालों के मनों पर इसका कोई फल नहीं आ सकता था (आयत 14)।

उन्हें तब तक अन्य भाषाएं बोलने से मना किया गया जब तक कोई उसका अर्थ बताने वाला न हो (आयत 28), क्योंकि यदि बोली गई अन्य भाषाएं सुनने वालों को समझ नहीं आती तो मण्डली में आने वाले अविश्वासियों में यही लगना था कि वे पागल हैं (आयत 23)।

इसके बजाय उन्हें भविष्यवाणी के दान यानी प्रचार करने के दान की इच्छा करने को कहा गया, क्योंकि इससे सुनने वालों की उन्नति, शिक्षा और शांति होनी थी। यह वह संदेश था जो सब सुनने वालों को समझ आ सकता था। किसी भी बोलने वाले का प्रमुख उद्देश्य अपने सुनने वालों की उन्नति होता है न कि यह कि लोग उसके अभिनय को सराहें (आयतें 1, 5)।

इन आयतों के विश्लेषण से हम देख सकते हैं कि आज के कथित पैंटिकॉस्टल लोगों द्वारा जो भी किया जाता है, वह वास्तव में 1 कुरिन्थियों 14 में पौलुस के द्वारा बताई बातों से बिल्कुल अलग है। वास्तव में कई बातों पर आज की जाने वाली बातें पवित्र आत्मा की अगुआई से दिए पौलुस के निर्देश का बिल्कुल उल्लंघन है। हम जानते हैं कि पवित्र आत्मा पवित्र शास्त्र में एक बात कहने के बाद आज उसके विपरीत कोई बात नहीं कहेगा। सो जो लोग आत्मा की सामर्थ से ऐसी बातें करने का दावा करते हैं वे झूठे दावे कर रहे हैं। निश्चय ही उनकी नीयत साफ है परन्तु उन्हें पवित्र शास्त्र का ज्ञान नहीं है और वे भ्रमित हैं क्योंकि वे वही करते हैं जैसे उन्हें सिखाया गया है।

नहीं आज कलीसिया की सभा में स्त्रियां "अन्य भाषाएं" नहीं बोल सकती। वास्तव में इसकी कभी भी अनुमति थी ही नहीं। प्रेरितों के युग में भी नहीं, जब भाषाओं का दान वास्तव में होता था।

पक्की नीवें

बिल निक्स

हम एक संदेहवादी युग में रहते हैं, जिसमें हम सुनिश्चित होने की कोशिश करते रहते हैं। बहुत से मार्ग हैं "जो मनुष्य को ठीक जान पड़ते हैं, परन्तु उनके अंत में मृत्यु ही मिलती है" (नीतिवचन 14:12)। हमारी पीढ़ी सैक्सुअल क्रांति जिसे नारीवादी मूवमेंट कहा जाता है, और गर्भपात को कानूनी दर्जा देने वाली गवर्निंग बॉडियों से निकली है। हमारे समाज की इन भूलों का असर कलीसिया के ऊपर भी हुआ है।

एक पक्का औरर सच्चा मार्ग है। "देखो, मैंने सिय्योन में नींव का एक पत्थर रखा है" (यशयाह 28:16)। यह नींव जिसकी बात यशायाह ने की थी, मसीह में और कलीसिया में, और मसीह के अनन्त सुसमाचार में इसको चलाने वाले नियमों में पूरी हो गई। "आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी" (मत्ती 24:35)।" और पवित्र शास्त्र की बात असत्य नहीं हो सकती" (यूहन्ना 10:35)। "उस नींव को छोड़ जो पड़ी है, और वह जो यीशु मसीह है, कोई दूसरी नींव नहीं डाल सकता" (1 कुरिन्थियों 3:11)। "मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे" (मत्ती 16:18)।

विवाह के संबंध में मनुष्य को दिए परमेश्वर के नियम से हम सुनिश्चित हो सकते हैं कि परमेश्वर आदमी को केवल एक ही पत्नी की (1 कुरिन्थियां 7:2) और स्त्री को केवल एक ही पति की अनुमति देता है। हम सुनिश्चित हो सकते हैं कि जब व्यभिचार के द्वारा इस बंधन को तोड़ दिया जाता है, तो केवल निर्दोष पक्ष को ही दोबारा विवाह करने का अधिकार है (मत्ती 19:9) वरना "को छोड़" का कोई मतलब नहीं है। हम सुनिश्चित हो सकते हैं कि पुरुष समलैंगिकता और स्त्री-समलैंगिकता परमेश्वर की स्वाभाविक विषम-लिंगी योजना का बिगाड़ है। मैं अहंकार नहीं कर रहा परन्तु परमेश्वर के मार्ग की ओर लौटने की सविनय विनती कर रहा हूं। मैं विवाह

में परमेश्वर की योजना का पक्षधर हूं और मुझे यकीन है कि यह सही है, इसलिए मुझे सही मार्ग से किसी भी प्रकार के भटकाव का विरोध करना आवश्यक है (चाहे मुझ पर "नकारात्मक" होने का ठप्पा ही लग जाए)।

हत्या करने की मनाही के परमेश्वर के नियम से हम सुनिश्चित हो सकते हैं कि गर्भपात पाप है, क्योंकि यह इनंसानी बच्चे की हत्या करता है (निर्गमन 20:13, रोमियों 13:9)। पुराने नियम में देखें या नये नियम में, दोनों में इसकी मनाही है। बच्चा कोख में हो (लूका 1:41) या कोख से जन्मा, (लूका 2:12) या अस्पताल में पड़ा बुजुर्ग शब्द वही है, मनुष्य का प्राण लेना गलत है।

इसी प्रकार से हम जान सकते हैं कि परमेश्वर की इच्छा पुरुषों (यूनानी अनेर) के लिए सभा के बीच में प्रचार करने और सिखाने और स्त्रियों के लिए केवल महिलाओं और बच्चों को सिखाने की है (1 तीमुथियुस 2:12, तीतुस 2:3-5)।

कुछ बातें हैं जिन्हें हम नहीं जान सकते, जैसे पृथ्वी की उम्र (चाहे विकासवादियों द्वारा बताए गए करोड़ों वर्षों में उलट हम इसे इतना पुराना नहीं मानते), या हमारे पास न ही वचन में से यह आश्वासन मिलता है कि परमेश्वर आराधना में गाने के साथ साजों की अनुमति देगा। कारण सीधा साजों के इस्तेमाल का नये नियम में कोई प्रमाण नहीं है। इसके इस्तेमाल की कोई आज्ञा, उदाहरण या निष्कर्ष नहीं है, बल्कि उलटा नया नियम बताता है। कि परमेश्वर की आराधना में मसीही लोग गाते थे। हम सुनिश्चित हो सकते हैं कि प्रभु ने एक देह के लिए सब बातों में एक ही नमूने का पालन करने को दिया है (2 तीमुथियुस 1:13) और वह एक देह कलीसिया है जिसे यीशु ने अपने ही लहू से मोल लिया है (कुलुस्सियसों 8:24, प्रेरितों 20:28)।

ऐसे बहुत से लोग हैं जो आज उन मार्गों पर चलने के लिए जिनके बारे में हम सुनिश्चित नहीं हो सकते, पुराने मार्गों को छोड़ रहे हैं। "सब बातों को परखो, जो अच्छी है उसे पकड़े रहो (1 थिस्सलुनीकियों 5:21)। ऐसे संसार में जो सच्चाई से बेदीनी/विश्वासत्याग की ओर जा रहा है, हम उसके वचन में बने रहें, क्योंकि तभी हम "सचमुच चेले" कहलाएंगे (यूहन्ना 8:32)। जैसे प्राचीनकाल के दाऊद ने कहा था, "यदि नीवें ढाह दी जाएं तो धर्मी क्या कर सकता है?" (भजन 11:3)।

मैं चर्च ऑफ़ क्राईस्ट का सदस्य क्यों हूं?

क्योंकि इसका नाम पवित्र शास्त्र में से है

लिरॉय ब्राउनलो

स्पर्जन और लूथर की गवाही

1. सबसे प्रसिद्ध और योग्य बैपटिस्ट प्रचारक, चार्ल्स स्पर्जन की भाषा पर ध्यान दें, 'मैं बैपटिस्ट नाम के लिए कहता हूं, कि यह नष्ट हो जाए, पर मसीह का नाम सदा तक बना रहे। मैं आनन्द से उस दिन की राह देखता हूं, जब कोई बैपटिस्ट नहीं रहेगा। मुझे आशा है कि वे शीघ्र ही खत्म हो जाएंगे। मुझे आशा है कि बैपटिस्ट नाम जल्द ही मिट जाएगा; पर मसीह का नाम सदा सर्वदा बना रहे।" स्पर्जन मेमोरियल

लाइब्रेरी, अंक 1 पृष्ठ 168.

2. मार्टिन लूथर के शब्द में सुनें जिसके नाम को बहुत से लोग ऊंचा उठाते हैं, "मेरी मिन्नत है कि मेरे नाम को अकेला छोड़ दो, और अपने आप को लूथरन नहीं, बल्कि मसीही कहलाओ। लूथर कौन है? मेरी शिक्षा मेरी नहीं है। मैं किसी के लिए क्रूस पर नहीं चढ़ा। संत पौलुस किसी को पौलुस का या पतरस का नहीं, बल्कि मसीह का ही कहलाना पसंद करता था। फिर मेरे लिए जो धूल और मिट्टी का गंदा थैला है, यह कैसे उचित है कि अपना नाम परमेश्वर की संतान को दूं? बंद करो, मेरे प्रिय मित्रो इन गुटबाजी के नामों और भेदभव को बंद कर दो, छोड़ दो यह सब; और आओ हम सभी अपने आप को केवल मसीही कहलाएं, जिससे हमें अपनी शिक्षा मिलती है।" द लाइफ ऑफ लूथर, बाय स्टॉर्क, पृष्ठ 289

इस प्रकार हम देखते हैं कि मनुष्यों के दिए गए नाम पहनकर, लोग केवल परमेश्वर को ही नहीं, बल्कि उन लोगों को भी नाराज करते हैं, जिन्हें वे बड़ाई देने का प्रयास करते है।

वाक्य

यदि हम कुछ विचारों को प्रस्तावना के रूप में लिख लें और फिर उनसे निष्कर्ष निकालें तो शायद यह और अधिक स्पष्ट हो जाएगा :

1. तर्क वाक्य एक

(1) बाइबल मनुष्यों द्वारा दिए जाने वाले नामों की निंदा करती है (1 कुरिन्थियों 1:12, 13)। (2) "लूथरन" नाम मनुष्यों द्वारा दिया गया है। (3) इसलिए "लूथरन" नाम दोषी ठहराया जा सकता है।

2. तर्क वाक्य दो

(1) बाइबल सिखाती है कि गुटबाजी के नाम शारीरिक हैं (1 कुरिन्थियों 3:3, 4)। (2) "मैथोडिस्ट" नाम किसी गुट का नाम है। (3) इसलिए, "मैथोडिस्ट" एक शारीरिक नाम है।

3. तर्क वाक्य तीन

(1) "विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है" (रोमियों 10:17)। (2) "एपिस्कोपल/एंग्लीकन चर्च" नाम परमेश्वर के वचन में नहीं है। (3) इसलिए "एपिस्कोपल/एंग्लीकन चर्च" नाम विश्वास से नहीं है।

4. तर्क वाक्य चार

(1) धार्मिक काम प्रभु के नाम में होना आवश्यक है (कुलुस्सियों 3:17)।
(2) प्रेसबिटेरियन लोग धार्मिक काम "प्रेसबिटोरियन" के नाम से करते हैं।
(3) इसलिए प्रेसबिटेरियन गलती के दोषी हैं।

5. तर्क वाक्य पांच

(1) मनुष्य को "मसीही" नाम में परमेश्वर की महिमा करने की आज्ञा है (1 पतरस 4:16)। (2) कैथोलिक लोग "कैथोलिक" नाम से परमेश्वर की महिमा करने का प्रयास करते हैं। (3) इसलिए कैथोलिक लोग परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन कर रहे हैं।

6. तर्क वाक्य छह

(1) उद्धार किसी दूसरे नाम में नहीं है (प्रेरितों 4:12)। (2) "बैपटिस्ट" कोई दूसरा नाम है। (3) इसलिए "बैपटिस्ट" नाम में उद्धार नहीं है।

छोटी सी प्रस्तावनाओं में दिए गए नाम उदाहरणों के रूप में इस्तेमाल किए गए हैं। और भी कई नामों का इस्तेमाल किया जा सकता था और उनसे भी यही निष्कर्ष निकलना था। यदि बड़ी और छोटी प्रस्तावना सही है और वह है भी, तो निष्कर्ष भी सही है। हम संसार के भले लोगों से सभी मानवीय फूट डालने वाले और वचन के बाहर के नामों को त्यागने का आग्रह करते हैं। इस विनती को काफी सफलता मिल रही है, क्योंकि हजारों लोग वचन को मानने के लिए बाइबल से बाहर की बातों को छोड़ रहे हैं।

धार्मिक शीर्षक

बहुत पुरानी बात है, यहूदी लोगों ने "आधी बोली अशदोदी" (नहेमायाह 13:23, 24) को अपनाकर अपनी भाषा बिगाड़ ली थी। सांकेतिक भाषा में, आज संसार में अशदोद की भाषा बहुत है अपनी बड़ाई करवाने वाले बहुत से ऐसे शीर्षकों का इस्तेमाल हो रहा है, जो बाइबल की शिक्षा के विपरीत हैं।

1. "रैवरेंड" रैवरेंड शब्द बाइबल के अंग्रेजी अनुवाद में केवल एक बार ही आया है, परन्तु मूल भाषा में यह कई बार मिलता है। पर वहां इसका इस्तेमाल मनुष्य को दिए जाने वाले पद के लिए नहीं है। किसी मनुष्य द्वारा अपने लिए इसे इस्तेमाल करना जब कि पवित्र आत्मा ने इस शब्द का इस्तेमाल कभी नहीं किया, परमेश्वर के वचन को बिगाड़ने का दोषी होने से बढ़कर कुछ नहीं है। बाइबल में "रैवरेंड पौलुस" "राइट रैवरेंड याकूब" और "द राइट रैवरेंड पतरस" कहीं नहीं मिलता। वे अपने आप को निर्बल मानव मानते थे, जिन्हें परमेश्वर की सहायता की आवश्यकता थी और "हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस" को ही महिमा देते थे (गलातियों 6:14)। कुछ प्रचारक पौलुस को केवल पौलुस, याकूब को केवल याकूब और यूहन्ना को केवल यूहन्ना और यीशु को केवल यीशु कहते हैं, पर अपने नाम के साथ दूसरे प्रचारकों को वे "रैवरेंड फलां-फलां" ही कहते हैं। यह अगर बहुत बड़ी त्रासदी नहीं, तो मजाक अवश्य है। यीशु ने भी, जब वह पृथ्वी पर देह में था, "अच्छा" शीर्षक अपनाने से इंकार कर दिया था (मत्ती 19:16, 17)। पौलुस ने अपने कुछ पत्र इन शब्दों से आरंभ किए, "मसीह यीशु का दास पौलुस।" पौलुस ने अपने आप को केवल "दास" या सेवक ही कहा था। पर परमेश्वर की प्रेरणा रहित आज के कई प्रचारक अपने नामों के साथ जितना हो सके, पवित्र और ऊंचे से ऊंचा शीर्षक लगाने की कोशिश करते हैं परन्तु यह कैसा विरोधाभास है? ऊंचे शीर्षक लगाने की इच्छा ऊंचा होने की इच्छा के साथ बढ़ती जाती है। हमें यीशु की ताड़ना वाले शब्द याद दिलाए जाते हैं, परन्तु तुम में ऐसा न होगा, परन्तु जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने। और जो तुम में प्रधान होना चाहे, वह तुम्हारा दास बने" (मत्ती 20:26, 27)।

2. पास्टर कलीसिया का मिनिस्टर या सुसमाचार प्रचारक तभी पास्टर या पासबान हो सकता है, जब उसे "अध्यक्ष के पद" पर अर्थात निगरान या ऐल्डर

नियुक्त किया जाए। नया नियम हर मण्डली में बिशपों निगरानों, ऐल्डरों या पासबानों (पास्टरों) के एक से अधिक होने की बात बताता है (प्रेरितों 14:23)। उनका काम झुण्ड की रखवाली के लिए पास्टर (रखवाले/पासबान) या चरवाहे का काम करना होता है। ये शब्द पदवियां नहीं, बल्कि "किसान", गुरु और बढ़ई की तरह संज्ञाएं हैं।

3. फादर या पादरी इस शब्द का इस्तेमाल सीधे-सीधे धार्मिक शीर्षक के रूप में मसीह की शिक्षा के विरूद्ध किया जाता है "और पृथ्वी पर किसी को अपना पिता न कहना, क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है, जो स्वर्ग में है" (मत्ती 23:9)। यह सांसारिक पिता की नहीं, बल्कि इस शब्द के धार्मिक इस्तेमाल की बात है, क्योंकि पवित्र आत्मा सांसारिक पिता के लिए "पिता" शब्द का ही इस्तेमाल करता है। आश्चर्य की बात नहीं है कि आज लाखों लोग अपने नाम के साथ इस शीर्षक का इस्तेमाल करते हैं, जिसकी मसीह द्वारा स्पष्ट मनाही की गई है?

मसीह की कलीसिया का नाम और भाषा पवित्र शास्त्र के अनुसार है। कोई इससे इंकार नहीं कर सकता। मसीह की कलीसिया का विश्वास तथा ढंग "बाइबल की बातों को बाइबल के नाम" से पुकारो। पौलुस ने तीमुथियुस को यह कहते हुए समझाया था कि "जो खरी बातें तू ने मुझ से सुनी है उन को उस विश्वास और प्रेम के साथ जो मसीह यीशु में है, अपना आदर्श बनाकर रख" (2 तीमुथियुस 1:13)। हमें चापलूसी वाले शीर्षकों या उपाधियों के आगे झुकने की प्रवृत्ति से बचना चाहिए, पर इस सलाह को मानना चाहिए; न मैं किसी आदमी का पक्ष करूंगा और न मैं मनुष्यों को चापलूसी की पदवी दूंगा। क्योंकि मुझे तो चापलूसी करना आता ही नहीं, नहीं तो मेरा सृजनहार क्षण भर में मुझे उठा लेता" (अय्यूब 32:21, 22)।

संवाद की समस्या को सुधारना

कोय रोपर

संवाद वैवाहिक जीवन का प्रमाण है। संवाद के बिना वैवाहिक जीवन खुशहाल नहीं होता, यद्यपि यह समाप्त भी न हो।

लगभग दो साल तक मेरी पत्नी ने घर से दूर नौकरी की। वह सोमवार सुबह जाती थी और शुक्रवार शाम को लौटती थी। मैं हर दिन उससे फोन पर बात करता था। क्यों? इसलिए नहीं कि अब मुझे उन सब चीजों का ध्यान रखना पड़ता था, जिनका ध्यान वह रखती थी, या मुझे उसे कुछ जरूरी बातें बतानी होती थी। मैं उसके लिए अपने प्रेम के कारण हर दिन उससे बात करता था। दूसरे शब्दों में वैवाहिक जीवन के लिए यह आवश्यक था। हमारे रिश्ते को इसकी आवश्यकता थी क्योंकि संवाद ही वैवाहिक जीवन का प्राण है।

संवाद एक चुनौती है। एक वक्ता अपनी पृष्ठभूमि पर आधारित एक संदेश बनाता है, और श्रोता इसे अपने अनुभव के आधार पर सुनता है। अगर दोनों को पृष्ठभूमि अलग होगी, तो संदेश को गलत समझा जा सकता है। जब हमारा परिवार ऑस्ट्रेलिया में था वहां के लोगों के लिए एक "नैपकिन" (या नैपी) बच्चे के डाइपर को कहा

जाता है। हमने नैपकिन मांगने के लिए एक संदेश भेजा, लेकिन हमारे आस्ट्रेलियन दोस्तों को दूसरा ही संदेश मिला।

इसी तरह वैवाहिक जीवन में संवाद बहुत मुश्किल भी है। पति-पत्नी का पालन-पोषण अलग-अलग परिवारों में होता है। अलग-अलग संस्कृति में संवाद की अलग-अलग आदतों के साथ। यही कारण है कि कई बार दोनों को एक-दूसरे को समझने में मुश्किल आती है।

क्या पति-पत्नी एक-दूसरे के साथ प्रभावशाली ढंग से संवाद कर सकते हैं? वैवाहिक जीवन में अच्छे संवाद के लिए क्या आवश्यकताएं हैं?

संवाद के प्रति वचनबद्धता

सबसे पहले तो आप में संवाद के प्रति वचनबद्धता का होना बहुत आवश्यक है। पति-पत्नी दोनों को इस बात का स्पष्टतया अनुभव करना चाहिए कि अगर वे अपने वैवाहिक जीवन को सफल बनाना चाहते हैं तो उन्हें आपस में संवाद (बातचीत) को बनाए रखना होगा।

पुरुषों को इस सलाह की अधिक आवश्यकता है, क्योंकि स्त्रियों को सबसे बड़ी शिकायत यही होती है कि उनके पति उनसे बातचीत नहीं कर रहे। पुरुष को यह लग सकता है कि वह काफी बोलता है, लेकिन पत्नी और अधिक बातचीत की आवश्यकता महसूस करती है। उसे उसकी इस आवश्यकता को पूरा करने का हर संभव प्रयास करना चाहिए।

प्रेम से भरा माहौल

दूसरा उचित बातचीत के लिए उचित माहौल का होना बहुत आवश्यक है। यदि कोई पुरुष या स्त्री प्रतिकूल माहौल में रहता है और आलोचना का पात्र हो, जिसकी हर बात को जांचा, परखा जाता हो, वहां बातचीत में रूकावट आती है। ऐसा व्यक्ति अपने व्यक्तिगत विचारों को जल्दी से व्यक्त नहीं करता। घर में बातचीत को प्रोत्साहित करने के लिए कैसा माहौल होना चाहिए।

(1) पति-पत्नी होने के नाते आपको स्वीकार्य माहौल बनाना होगा, जिसमें दोनों पक्षों को यह पता हो कि बिना किसी डर के उन्हें अपना पक्ष रखने की छूट है।

(2) आपके घर का माहौल सम्मानजनक होना चाहिए, जिसमें विवाहित साथी अपने दूसरे साथी को अपने समान ही एक समझदार व्यक्ति समझता है, जिसके विचार सुनना और राय लेना बहुत ही उपयुक्त है।

सुनने के गुण को बढ़ाना

तीसरा, आपको लगातार अपने सुनने के गुण को बढ़ाने का प्रयास करते रहना चाहिए। आप प्रभावी ढंग से कैसे सुन सकते हैं? दो चीजों के लिए सुनें, जो कहा गया है उसके वास्तविक विषय के लिए और शब्दों के भावात्मक विषय के लिए। जो कहा गया है (वास्तविक विषय) आपको सुनने की आवश्यकता है, लेकिन इससे भी अधिक आपको यह सुनने की आवश्यकता है कि यह कैसे करें और क्यों कहा गया (भावात्मक विषय)। लोग बातचीत केवल चुने गए शब्दों से नहीं, बल्कि अपनी आवाज के सुर शब्दों में ठहराव और "हाव-भाव" के द्वारा भी करते हैं। किसी कथन का सही संदेश वक्ता के चेहरे, हाथों, मुद्राओं और उसके पूरे शरीर से मिलता है।

शब्दों को सुनना और समझना आवश्यक है-"तथ्यों को पूरी तरह समझने के लिए" और जितना हो सके यह जानने के लिए कि आपकी पत्नी या पति क्या कह रहा है। तथापि अगर आप केवल शब्दों को सुनें-चाहे आप उन्हें दोबारा जुबानी बोल सकें पर उन शब्दों के भावनात्मक रूप पर ध्यान न दे तो आप संदेश का सबसे आवश्यक भाग खो देंगे।

इसके अतिरिक्त आपको सहानुभूति या समानुभूति से सुनने की आवश्यकता है। आपको संदेश के केवल भावनात्मक सुर को ही नहीं सुनना चाहिए बल्कि इस तरह से उत्तर देना चाहिए कि आपके साथी यह जानें कि आप उसकी भावनाओं को समझते हैं।

फिर भी आपको पूरी एकाग्रता से सुनना चाहिए।

(1) अपने कानों से ठीक-ठीक सुनें कि आपका साथी क्या कह रहा है।

(2) अपनी आंखों से देखें कि आपका साथी कैसे कह रहा है। आपको उसे देखना चाहिए यह जानने के लिए कि वह जो कह रहा है उसके पीछे उसकी भावना क्या है।

(3) अपने दिल से अपने आप को यह जानने की अनुमति दें कि आपके साथी की भावना क्या हैं।

(4) अपने हाथों से अपने प्रेम का भरोसा जताएं। अब आपका/आपकी साथी आपसे बात करें तो उसे हाथ पकड़ना या स्पर्श करना अच्छा है।

(5) अपने मुंह से अपनी प्रतिक्रिया दें, उसे यह विश्वास दिलाने के लिए कि आपको उसकी परवाह है।

संवाद के अलग-अलग ढंगों को मानना

चौथा, आपके लिए इस तथ्य को स्वीकार करना आवश्यक है कि आपका और आपके जीवनसाथी का सम्भवतया संवाद का ढंग अलग-अलग है। कई वर्षों से आपने अपने लिए व्यक्तिगत, पढ़ाई और पिछले अनुभव के आधार पर संवाद का एक ढंग अपनाया हुआ है- और उसी तरह से आपके जीवनसाथी ने भी।

शायद आपका साथी किसी ऐसे परिवार से आया है, जहां लगता है, हर कोई दूसरे पर चिल्लाता है। चाहे परिवार के सदस्य क्रोध में हो या गम में या संतुष्ट हो, वे एक-दूसरे से चिल्लाकर ही बात करते हैं। दूसरों को सुनकर ऐसा लगता होगा कि वे आपस में हमेशा लड़ते रहते हैं। उनके लिए ऊंचा बोलना एक आम बात है, यह तो केवल उनके बातचीत करने का ढंग है। अगर आपके साथी की पृष्ठभूमि ऐसी है तो फिर उसके चिल्लाकर बोलने से आपको हैरानी नहीं होनी चाहिए, जबकि आपके प्रिय साथी को अपनी इस आदत पर काबू पाने का प्रयास करना चाहिए पर पुरानी आदतों को छोड़ना बहुत मुश्किल है। नि:संदेह, आपको आपके साथी के बातचीत के ढंग को स्वीकार करना सीखना होगा।

इसके अलावा पति-पत्नी के अलग बातचीत (संवाद) के ढंग के कारण वैवाहिक जीवन में समस्याएं आ सकती है। स्त्रियां आमतौर पर लोगों और उनकी समस्याओं के बारे में बातचीत करना पसंद करती हैं और मानती है कि बातचीत का इस्तेमाल अपने विचारों को दूसरों के साथ बांटने के लिए किया जाना चाहिए। पुरुष घटनाओं पर अधिक चर्चा करते हैं- राजनीति, खेलकूद और समाचार पर चर्चा और मानते हैं कि बातचीत का इस्तेमाल तथ्यों को प्रस्तुत करने और समस्याओं का हल निकालने के लिए

किया जाना चाहिए। पुरुष और स्त्रियां स्वाभाविक तौर पर अलग स्तर पर बातचीत करते हैं।

एक बार मेरी पत्नी मुझे अपनी कोई समस्या बता रही थी। मैं उसे बड़े ध्यानपूर्वक सुन रहा था और उसका उत्तर भी दे रहा था, मैं उससे सहानुभूति जताते हुए "हूं, हां. हम्म" की आवाजें निकालने लगा। तब मेरे आश्चर्य की कोई सीमा न रही जब वह नाराज होकर कहने लगी कि मुझे उससे सहानुभूति नहीं है। "मैंने ऐसा क्या किया है?" मैंने पूछा "मैं सुन रहा था। मैं अभी इस समस्या को हल नहीं कर सकता था, तो मैं क्या कह सकता था?" उसने उत्तर दिया, "तुम्हें इसके लिए कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं। फिर मैं क्या कह सकता हूं?" मैंने पूछा, उसने कहा, "मैं तुम्हें बताऊंगी कि तुम क्या कह सकते हो, तुम कह सकते हो, 'शारलट, तुम्हें कोई समस्या है, नहीं है।"

यदि मुझे सुनने के लिए कभी सबसे बेहतर परामर्श मिला तो वह यही था। मैंने भी यही सोचा था कि जब मेरी पत्नी मेरे पास अपनी समस्या लेकर आई तो मैंने भी दूसरे पुरुषों की तरह यही सोचा था कि वह चाहती है कि मैं सभी की समस्या को हल करके सब ठीक कर रहा हूं। तथापि वह मुझसे अपनी समस्या का हल लेने नहीं आई थी। वह तो एक सहानुभूति भरा काम चाह रही थी। जो बस उसकी बात को सुने और उसकी समस्या को सहानुभूतिपूर्वक मान ले। वह मीठी आवाज में यह सुनना चाहती थी, "तुम्हारी तो सचमुच समस्या है, है न!" यदि वह यह सब सुनती तो उसे बहुत अच्छा लगता। यदि संदेश संतोषजनक परिणामों के साथ भेजा और ग्रहण किया गया होता।

पतियों को इस बात की समझ होनी चाहिए कि उनकी पत्नियों का बातचीत का ढंग अलग होता है, और उन्हें इस अन्तर को मानने की आवश्यकता है। उन्हें पत्नियां क्या कहना चाहती है, यह सुनना और उसका ठीक-ठीक उत्तर देना भी सीखना होगा।

राज्य और पराक्रम और महिमा तेरे ही है

ह्युगो मेकोर्ड

बाइबल में मत्ती 6:9-13 में चेलों की प्रार्थना "हमें बुराई से बचा" के साथ समाप्त होती है। परन्तु न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबल की तरह हिन्दी में इसमें यह सुन्दर निष्कर्ष भी शामिल किया गया है, "...क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं। आमीन।"

जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे का मानना था कि ये शब्द आत्मा की प्रेरणा के बिना जोड़े गए थे। उसका कहना था, "एक लेखक के रूप में इस स्तुति को अच्छे कारण से नकारा जाता है।" थोड़े बहुत अन्तर से बहुत से अधिकारी कुछ प्राचीन लोग इसके साथ जोड़े हैं, राज्य पराक्रम और महिमा तेरे ही है। आमीन।

प्रसिद्ध निष्कर्ष निकालने वाले उन प्राचीन अधिकारियों में से कुछ अधिकारी काफी आदरणीय हैं। यूनानी हस्तलेख थीटा में भी अन्त लम्बा है (जिसकी तिथि नौवीं और दसवीं शताब्दी के बीच है)। हाल ही की विद्वता में थीटा का प्रभाव बढ़ रहा है। पुराने लातीनी हस्तलेख "एफ" में एक प्रसिद्ध निष्कर्ष मिलता है जो छठी शताब्दी का

है। यह पेशिता सीरियाक में भी मिलता है, जिसके लिए भाई मैक्गर्वे ने कहा है:

बहुत से प्रमाण मिलकर यह प्रमाणित करते हैं कि यह हमारे युग की दूसरी शताब्दी में बनाया गया था, और जहां तक नये नियम की बात है, यह यूनानी शास्त्र से लिया गया था जो मूल लेखकों द्वारा लिये जाने के एक सौ वर्ष से भी पहले तैयार हो गया था। वर्तमान समय से इसकी तिथि से यह सीरियाई मसीहियों की प्रचलित बाइबल थी, और वे इसका इस्तेमाल अपनी व्यक्तिगत आराधना में करते थे। बाइबल से जुड़ी आलोचना के लिए यह सबसे अधिक मूल्यवान संस्करण है।

कई प्राचीन हस्तलेख सुन्दर स्तुति और अधिक महत्वपूर्ण होने के बावजूद इसे निकाल देते हैं। परन्तु इस प्रश्न में जिन शब्दों में विचार व्यक्त किए गए हैं, वह पवित्र शास्त्र के अनुसार है (देखिए 1 इतिहास 29:11; 2 तीमुथियुस 4:18; यहूदा 25)। पक्के तौर पर नहीं यह कहा जा सकता कि यह वाक्यांश बाद में जोड़ा गया, इसलिए इसको समर्पित पाठ व्यर्थ नहीं होगा।

"राज्य और प्राक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं। आमीन।" कहते हुए आपका हृदय प्रशंसा, स्तुति और भय से भर जाना चाहिए। आप स्वतंत्रता के हर भाव को त्याग कर अपने आपको परमेश्वर के चरणों में समर्पित कर रहे हो। आपकी जीभ चापलूसी कर रही हैं ये शब्द किसी भीड़ के सामने या एकांत में याद की गई प्रार्थना के रूप में बार-बार कहने व्यर्थ और उपहासपूर्ण हैं, परन्तु जब यही शब्द दीन और कृतज्ञ मन की गहराइयों से निकलें, तो सम्मान देने के लिए प्रवचन को इससे अच्छे ढंग से समाप्त नहीं किया जा सकता है।

"राज्य" का अर्थ

"राज्य... तेरा है" कहने से आपका क्या अभिप्राय होता है? हम जानते हैं कि जब यीशु ने चेलों को प्रार्थना करना सिखाया तो उस समय राज्य अस्तित्व में नहीं था। वह चाहता था कि वे राज्य के आने के लिए प्रार्थना करें। फिर इस अंतिम बिनती का क्या अर्थ है जिसमें राज्य को अस्तित्व में और पहले से ही परमेश्वर का बताया गया है? जोसेफ हेनरी थेयर का का कहना है यूनानी शब्द "राज्य" का अर्थ केवल "एक राज्य" ही नहीं बल्कि "राजसी सामर्थ, राजा होना, सत्ता, शासन" है। एक बेसिलिया अर्थात राज्य था जिसका अस्तित्व उस समय नहीं था, परन्तु जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी ("तेरा राज्य आए"; मत्ती 6:10) यीशु अपने चेलों को बता रहा था कि इस राज्य को प्रार्थना का मुद्दा न बनाया जाए। एक बेसिलिया भी था जिसका अस्तित्व पहले से ही था ("राज्य... तेरा है")। इसका क्या अर्थ था? निश्चय ही यह वह राज्य नहीं था जिसके विषय में दानिय्येल ने कहा था कि स्वर्ग का परमेश्वर उसे खड़ा करेगा (दानिय्येल 2:44); क्योंकि 30 ईस्वीं के पिन्तेकुस्त के दिन से बहुत पहले, एक राज्य पहले से ही अस्तित्व में था अर्थात परमेश्वर का। एक हजार वर्ष पहले, दाऊद ने परमेश्वर की स्तुति करते हुए इस राज्य की बात की थी, "राज्य तेरा है" (1 इतिहास 29:11)। चेलों की प्रार्थना की अंतिम बिनती में वही बात है, जो दाऊद के मन में थी अर्थात भजन लिखने वाले के कहने का भाव वही होगा जो थेयर ने दिया है अर्थात "राजसी सामर्थ, राजा होना, सत्ता, शासन।"

इस बाद वाले अर्थ से क्या संदेश मिलता है? इसका अर्थ है कि सब कुछ परमेश्वर के अधीन है, 'महिमा, पराक्रम, शोभा, सामर्थ और विभव तेरा ही है।" यह परमेश्वर की सृष्टि है, और जो कुछ भी है वह या तो उसके निर्देश से है या उसकी अनुमति से। उसके पास असीमित सत्ता हैं ऐसा अधिकार बाइबल के परमेश्वर को देकर हम आकाश और पृथ्वी के

उस एक परमेश्वर का आदर कर रहे होते हैं। हम पुकार-पुकार कर कह रहे होते हैं कि लोगों के सब देवता मूर्तियां ही थीं (भजन 96:5) जो न देख सकती हैं, न सुन सकती है और न ही समझ सकती है (दानिय्येल 5:23)। हम यह दावा कर रहे हैं कि घमण्ड और बुद्धि के देवता (अपने आपको देवता बनाना और मन के अनुसार पूजा करना) व्यर्थ और निर्बल हैं। हम परमेश्वर को बता रहे हैं कि हम उसे कितना मानते हैं :

यद्यपि आकाश में और पृथ्वी पर बहुत से ईश्वर कहलाते हैं (जैसा कि बहुत से ईश्वर और बहुत से प्रभु हैं)। तौभी हमारे निकट तो एक ही परमेश्वर है, अर्थात पिता जैसा की सब वस्तुएं हैं, और हम उसी के लिए हैं और एक ही प्रभु है, और हम भी उसी के द्वारा है (1 कुरिन्थियों 8:5, 6)।

यहोवा राजा है (भजन 93:1)।

केवल एक ही परमेश्वर है (भजन 86:10)।

प्रलय की बाबुल की परम्परा से जुड़े देवता तो आपस में झगड़ते और एक दूसरे पर क्रुद्ध होते थे, परन्तु बाइबल का परमेश्वर ऐसा परमेश्वर है जिसका नूह, दुष्ट लोगों और सारे संसार पर नियंत्रण था। बाबुल की कहानी इसके देवताओं को स्वामियों के रूप में ऊंचा नहीं करती क्योंकि पानी देखकर वे घबरा गए थे और "कुत्तों की तरह इकट्ठे होते थे।" "राज्य.... तेरा है", कहकर, आप मान रहे होते हैं कि "यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है" (व्यवस्थाविवरण 6:4)। आप यह स्वीकार कर रहे हैं कि वायु और समुद्र उसकी आज्ञा मानते हैं, और सब मनुष्य "उसकी प्रजा और उसकी चराई की भेड़ें हैं" (भजन संहिता 100:3)।

प्राचीन फारसी धर्म जोरास्ट्रियनवाद में दो विरोधी देवता थे, ओरमज्ड़ और अहरिमन इसके विपरीत बाइबल केवल एक ही परमेश्वर को जानती है, जिसका राज्य समय और स्थान में, मन और तत्व और आत्मा पर है। क्या संसार में पाई जाने वाली बुराई के लिए वह जिम्मेदार हैं? नहीं, वह तो विश्वासयोग्य और अन्याय न करने वाला परमेश्वर है (व्यवस्थाविरण 32:4); वह तो धर्मी और न्यायी है। परमेश्वर का संसार का राज्य और शासन इतना स्पष्ट है कि बुराई को घटने की अनुमति देकर, वह कहता है, "मैं उजियाले का बनाने वाला और अंधियारे का सृजनहार हूं, मैं शांति का दाता और विपत्ति को रचता हूं, मैं यहोवा ही इन सभी का कर्त्ता हूं। (यशायाह 45:7)।

यह भी स्मरण रखें कि परमेश्वर ने फारसी धर्म को जानने वाले राजा कुस्त्रु से ये बातें कीं। परमेश्वर उसे और हम सबको बता रहा था कि राज्य केवल उसी का है, "मैं यहोवा हूं और दूसरा कोई नहीं, मुझे छोड़ कोई परमेश्वर नहीं" (यशायाह 45:5)।

कोई स्वर्गदूत परमेश्वर के शासन के विरूद्ध विद्रोह करके (यहूदा 6), परमेश्वर के अधीन ही रहता है। उसे न्याय के उस महान दिन तक अंधकार की बेड़ियों में रखने के लिए स्वर्ग से फैंक दिया जाता है। ऐसा विद्रोही जानता है कि परमेश्वर अपने राज्य में है; कांपते हुए कष्ट का समय निकट आने पर वह चिन्हित होता हैं जिस प्रकार अदन में उसने आदम और हव्वा को भरमाया था, वैसे ही उसे लोगों को भरमाने की अनुमति मिल सकती है। उसे अय्यूब जैसे किसी व्यक्ति की परीक्षा लेने की अनुमति भी मिल सकती है, परन्तु ऐसी परीक्षा परमेश्वर की निगरानी में ही होती है। स्वर्ग के परमेश्वर के पास सारा अधिकार है, और शैतान को न चाहते हुए भी उसके सामने झुकना पड़ेगा। परमेश्वर जो भी अनुमति दे, शैतान अवसर नहीं गंवाता है; परन्तु परमेश्वर नियंत्रण अपने हाथ में रखता है और सब काम अपनी योजना के अनुसार ही होने देता है। ऐसा वह कैसे कर सकता है? वह ऐसा कर सकता है क्योंकि

राज्य अर्थात शासन तो उसी का है। सब वस्तुएं उसी की, उसी के द्वारा और उसके लिए हैं। राजा अपनी अनुमति से शासन करता है, क्योंकि वह राजाओं का राजा है और प्रमुख के रूप में सबसे ऊंचा किया गया है।

30 ईस्वीं वाले पिन्तेकुस्त के दिन से ही, परमेश्वर ने आकाश में, पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे की सारी शक्ति (मत्ती 28:18; फिलिप्पियों 2:10) स्वेच्छा से इकलौते पुत्र को दे दी है। वह पुत्र न केवल अपने राज्य (बुलाए हुए लोग, राज्य के पुत्र) का राजा है, बल्कि वह पृथ्वी के राजाओं का भी हाकिम है (प्रकाशित वाक्य 1:5)। समय के अंत तक वह राजा ही रहेगा (1 कुरिन्थियों 15:24), जब वह राज्य को अपने पिता के पास सौंप देगा।

निश्चय ही जिसने यीशु को वह सारी शक्ति दी, स्वयं वह अपने पुत्र के अधीन नहीं हुआ। राज्य उसे सौंपने के समय पुत्र अपने आपको और हमें भी उसके हाथ में सौंप देगा, और सब कुछ फिर से महान परमेश्वर के अधीन हो जाएगा, ताकि "सब में परमेश्वर ही सब कुछ हो" (1 कुरिन्थियों 15:28) उसके दानों और अनुग्रह के लिए परमेश्वर का धन्यवाद वर्णन से बाहर है। हमारे परमेश्वर की बुद्धि और मंशा की महिमा हो। **"और पराक्रम" भौतिक शक्ति** परमेश्वर के राज्य के अर्थ पर मनन करते हुए, हमने चेलों की प्रार्थना की अंतिम बिनती में उल्लेखित दूसरी बात अर्थात "पराक्रम" के बारे में भी कुछ सीखा है। सर्वशक्तिमान के पराक्रम अथवा शक्ति पर ध्यान करके, हम आश्चर्यचकित हो जाते हैं। उसने न केवल हमारे लिए यह अद्‌भुत पृथ्वी बनाकर, इसे मन और तत्व से भरपूर किया बल्कि इसे बिना सहारे के लटकाया भी (अय्यूब 26:7)। उसका भौतिक संसार इतना विशाल होने पर भी, उसकी सृष्टि का केवल एक छोटा सा पहलू है, कि मनुष्य की सबसे शक्तिशाली दूरबीनें भी उसके आयामों को माप नहीं सकती। वह हमारे संसार को एक हजार मील प्रति घण्टा की गति से दिन और रात में ही नहीं बदलता, बल्कि वह तो हमारे संसार को सूर्य के इर्द-गिर्द 18 मील प्रति सैकण्ड की गति से लगभग 100 करोड़ मील तक एक अदृश्य मार्ग पर चलाता भी है। प्लूटो के लिए उसका मार्ग 35 करोड़ मील लम्बा है, इतना लम्बा कि सूर्य के इर्द-गिर्द एक चक्कर लगाने के लिए प्लूटो को 248 वर्ष से अधिक समय लग जाता है। एक रेडियो संदेश एक सैकण्ड में संसार के सात चक्कर लगाता है, परन्तु सबसे निकट वाला तारा भी इतना दूर है कि उसी संदेश को, उस तारे से पृथ्वी पर भेजने के लिए चार से अधिक वर्ष लगेंगे। विलियम्स टाउन, मेसाचुएट्स में विलियम्स कॉलेज की होपकिंस ऑब्जर्वेटरी की दीवार पर यशायाह 40:26 से यह पद लेकर लिखा गया है। "अपनी आखें ऊपर उठाकर देखो, किसने इनको सृजा? वह इन गणों को गिन-गिन कर निकालता, उन सबको नाम ले लेकर बुलाता है? वह ऐसा सामर्थी और अत्यंत बलि है कि उनमें से कोई बिना आए नहीं रहता," संसार के विशाल आकार पर दाऊद के साथ अभिभूत होने के लिए आत्मा की प्रेरणा की नहीं बल्कि केवल एक प्राकृतिक दर्शन की आवश्यकता है।

जब मैं आकाश को,
जो तेरे हाथों का कार्य है,
और चन्द्रमा का तारागण को
जो तूने नियुक्त किए है,
देखता हूं
तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे,
और आदमी क्या है कि तू उसकी सुधी ले?
(भजन संहिता 8: 3,4; 33: 6-9 भी देखिए)।